

उत्तर वैदिक काल की सामाजिक स्थिति

उत्तर वैदिक काल में समाज चार वर्गों में बंटा हुआ था। ब्रह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। समाज में ब्रह्मणों का धार्मिक कार्य ब्रह्मणों के द्वारा ही होता था यज्ञ अनुष्ठान, पूजा पाठ ब्रह्मणों द्वारा सम्पन्न होता था। उत्तर वैदिक काल में यज्ञ का महत्व बढ़ गया था। विधानों ब्रह्मणों की शक्ति में अपाट वृद्धि हुई। समाज में ब्रह्मणों के बढ़

क्रियाओं का स्वातंत्र्य था। साम्राज्य की
 सुरक्षा का भार क्रियाओं पर था।
 समाज में तीसरा स्तर वैश्यों का
 था। वैश्य विभिन्न उद्योग एवं व्यापार से
 जुड़े हुए थे। चौथा स्तर शूद्रों का था समाज
 में शूद्रों की स्थिति अच्छी नहीं थी।
 शूद्रों का सर्वोच्च निम्न स्तर था। शून्य
 श्रेणी वर्गों का सेवक था। उन्नीसवीं शताब्दी
 के अनुसार शूद्रों का कार्यकाल पड़ता था।
 राजा, उपर के तीनों वर्गों पर प्रमुख जमाप
 करों का चला करता रहा।

शास्त्रम व्यवस्था - मानव जीवन को चार
 शास्त्रों में विभाजित किया
 गया था। ये चार शास्त्र हैं ब्रह्मार्थ,
 गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास। उत्तर वैदिक
 काल में ब्रह्मार्थ, गृहस्थ, वानप्रस्थ का
 ही उल्लेख है। संन्यास शास्त्र का नहीं।
 गृहस्थ शास्त्र का विशेष महत्व दिया जाता
 था।

समाज का आधार परिवार या कुटुंब
 था। पितृसत्तात्मक परिवार था। पिता
 परिवार का मुखिया होता था।

विवाह प्रथा - उत्तर वैदिक काल में
 शास्त्रोक्त मन्त्र-वैवाहिक
 विवाह, बहु विवाह, विधवा विवाह,

~~विश्वाम~~ देहज प्रथा का प्रचलन था।
 राजपरिवारों में बहुविवाह और स्वयंवर
 की प्रथा प्रचलित थी। उच्च वर्ग के
 पुरुष निम्न वर्ग की स्त्रियों से वैवाहिक
 संबंध स्थापित कर सजल था लेकिन
 निम्न वर्ग के पुरुष उच्च वर्ग की
 स्त्रियों से विवाह नहीं कर सकते थे।
 सजात विवाह पर प्रतिबंध था। अलग
 जातीय विवाह प्रचलित थे। पुरुष
 सुनो से वैवाहिक संबंध कायम करना धर्म
 विरोधी और निन्दनीय माना जाता था।

स्त्रियों की स्थिति - उत्तर वैदिक काल में स्त्रियों
 की दशा मध्य वैदिक काल
 की तुलना में अच्छी नहीं थी। उनका
 सम्मान घट गया था। पुरुष सम्पत्ति
 और राजनीतिक सभा में भाग लेने की
 अधिकारी नहीं थी।

भोजन - उत्तर वैदिक आर्य आकाशपति
 और भोजपति थे उनका
 मुख्य भोजन गेहूं की, पावल दुध दही,
 मक्खन, जल सेब, मोम, वगैरे।
 उनका मुख्य पेय पदार्थ सोमरस
 था।

वस्त्र एवं आभूषण - आर्य सूती रेशमी
 वस्त्र धारण

करते थे। स्त्री पुरुष दोनों भास्वरुण धारण
करते थे। उनके भास्वरुण रोग चौकी जेहोले थे

मनोरंजन - तत्कालीन समाज में संगीत,
नृत्य, पासा खेलना, शिकार
करना, रथा की दौड़, बुझ दौड़, भादि
मनोरंजन के साथ थे।

शिक्षा - उत्तर वैदिक युग में शिक्षा की
प्रगति हुई। विद्यावाणी उपनयन
संस्कार के बाद शिक्षा शुरू करते थे।
लेकिन युद्ध और स्त्री यह संस्कार नहीं कर
सकते थे। विद्यावाणी को गुरुकुल
में रहते हुए गुरु की सेवा का शिक्षा
प्राप्त करनी पड़ती थी। औपनिषद विद्या
में वेद विद्या, ब्रह्म विद्या, अत विद्या, अक्षर
विद्या, तर्कशास्त्र, इतिहास, उपनिषद भादि
सम्वृत थे। इनके साथ साथ स्वाध्याय
प्राणायाम, तन्त्रादिक एवं धार्मिक
कर्म का भी स्थान दिया जाता था।
शिक्षा की मौखिक व्यवस्था थी।
लगभग 12 वर्ष तक गुरुकुल में रहकर
शिक्षा पूरी करनी पड़ती थी।